'ओ३म्'

संयुक्त राष्ट्र एजेंडा 2030

(समीक्षा एवं समाधान)

लेखक

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

प्रकाशक

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

वर्ष 2021

कार्तिक शुक्ला ६, विक्रम संवत् 2078,
दिनांक : 10.11.2021

संख्या : 1500

सहयोग : गम्भीरता से पढ़कर अपने कर्तव्य को समझें। यदि आपको उचित प्रतीत होवे, तो वैदिक विज्ञान अनुसंधान हेतु आर्थिक सहयोग कर सकते हैं।

यह पुस्तक **श्रीमती नेनु बाई**, आर्य समाज मन्दिर, सुमेरपुर (राज.) के सात्विक सहयोग से मुद्रित की गई है।

प्रकाशक
श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
(वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)
वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम, भीनमाल, जालोर - 343029 (राजस्थान)

ई-मेल : info@vaidicphysics.org
वेबसाईट : vaidicphysics.org
सम्पर्क सूत्र : 02969 222103, +91 9829148400

भूमिका

वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र संघ सम्पूर्ण विश्व को सुखी, समृद्ध, स्वस्थ व शिक्षित बनाने हेतु **एजेंडा 2030** पर कार्य कर रहा है। देखने पर यह बहुत आकर्षक प्रतीत होता है परन्तु इसे पूरा पढ़ने पर मुझे यह एजेंडा मानवमात्र के लिए घातक लगा, विशेषकर छोटे निर्धन देशों, विकासशील देशों तथा बड़े व विकसित देशों के भी सामान्य जनों के लिए यह दूरगामी भयंकर दुष्परिणाम लाने वाला है। इस एजेंडे में विश्व भर से गरीबी, अशिक्षा, रोग, पर्यावरण प्रदूषण, असमानता, हिंसा, अन्याय, शोषण एवं भेदभाव आदि को दूर करके अच्छी शिक्षा, रोजगार, उन्नत कृषि, अच्छा स्वास्थ्य, शुद्ध जलवायु, समानता, मानव अधिकार, उच्च तकनीक जैसे स्वप्न दिखाए गए हैं। इस कारण, इस पत्र के माध्यम से मैंने संयुक्त राष्ट्र संघ को यह महत्वपूर्ण सार्वजनिक निवेदन किया है तथा इन सभी बिन्दुओं की समीक्षा करके, अनेक वेदानुकुल समाधान सुझाये हैं। इसे लिखने के लिए मैंने अनेक शोध लेखों को उद्धृत किया है। मैंने विश्व को बचाने के लिए ही यह प्रयास किया है।

आप सभी जनों से निवेदन है कि वे मेरे इस पत्र को बहुत गम्भीरता से पढ़े क्योंकि विश्व को बचाने के लिए आप सबका जागरूक होना अनिवार्य है। इसलिए आप इस प्रयास में सक्रिय सहयोग प्रदान दें, अन्यथा हमारी पीढ़ी हमें धिक्कारेंगी। हमने इस पत्र के माध्यम से आप सभी को एक दिशा देने का प्रयास किया है, लेकिन चलना आप सभी को ही है और इस पर कैसे चलेंगे यह भी आपको ही सोचना है।

संयुक्त राष्ट्र से सार्वजनिक निवेदन

दिनांक : 10-11-2021

सेवा में

माननीय श्रीमान् महासचिव, संयुक्त राष्ट्र संघ
न्यूयॉर्क, संयुक्त राज्य अमेरिका

विषय - एजेन्डा 2030

महोदय!

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रकाशित विज़न 2030 को पढ़कर प्रारम्भिक रूप से किसी को भी यह प्रतीत हो सकता है कि विश्व को सुखी बनाने का इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं हो सकता। इसका विज़न-

We envisage a world free of poverty, hunger, disease and want, Whare all life can thrive. We envisage a world free of fear and Violence. A world with universal literacy. A world with equitable and universal access to quality education at all levels, to health care and social protection, where physical, mental and social well-being are assured. A world where we reaffirm our commitments regarding the human right to safe drinking water and sanitation and where there is improved hygiene; and where food is sufficient, safe, affordable and nutritious. A world where human habitats are safe, resilient and sustainable and where there is universal access to affordable, reliable and sustainable energy.[1]

अर्थात् सम्पूर्ण विश्व को गरीबी, भुखमरी, भय, हिंसा आदि से पूर्ण मुक्त करके शिक्षित, स्वस्थ, सामाजिक रूप से सुरक्षित करना। मानवाधिकारों की रक्षा, शुद्ध

पेयजल, स्वच्छता, पौष्टिक भोजन एवं ऊर्जा की प्रचुरता आदि की व्यवस्था करना।

बहुत ही आकर्षक लगा, परन्तु जब सम्पूर्ण प्रारूप को देखा, तो ऐसा प्रतीत हुआ कि या तो इस एजेण्डे के पीछे कुछ महत्वाकांक्षी व्यक्तियों का अन्य कोई गुप्त एजेण्डा है अथवा इस विजन को साकार करने के लिए विश्व के नीति-निर्धारक कुछ भूल कर रहे हैं। **यदि हम संयुक्त राष्ट्र संघ के इतिहास पर दृष्टि डालें, तो हमें यह प्रतीत होता कि उसने और उससे सम्बद्ध अन्य वैश्विक संस्थाओं ने संसार को निराश ही अधिक किया है।** कोई शक्तिशाली देश अपने पड़ोसी देशों की भूमि पर अधिकार करता रहा, समुद्री सीमाओं का उल्लंघन करता रहा, पड़ोसियों को धमकाता रहा, परन्तु कोई कुछ नहीं कर सका। कुछ देश परमाणु हथियारों का जखीरा जमा करते हुए भी दूसरे देशों को परमाणु हथियार न बनाने, न बढ़ाने, न परीक्षण करने की चेतावनी देते रहे हैं। वे किन्हीं देशों को पारस्परिक व्यापार करने पर प्रतिबंधित करने की धमकी देते हैं, कभी भी किसी को प्रतिबंधित करके उनकी अर्थव्यवस्था को बर्बाद कर देते हैं। कोई-२ देश किसी देश विशेष के साथ किसी भी देश को सम्बन्ध बनाने पर दण्ड भी दे देते हैं, वे किसी भी देश पर प्रतिबंधित हथियार रखने के मिथ्या संदेह में उस देश पर आक्रमण करके उसके राष्ट्रपति तक की हत्या भी कर देते हैं।

पिछले वर्ष चीन की वुहान लैब से कोरोना वायरस फैल जाता वा फैलाया जाता है, उस लेब को अनुदान देने वाला कौन देश था, कौन-२ पूँजीपति थे ? उस वायरस को तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप ने चीनी वायरस कहा था। यह सारे संसार ने जाना, परन्तु कोई कुछ नहीं कर सका। इस रोग की क्या-२ प्लानिंग हुई, इसकी वैक्सीन के विषय में भी शीर्ष और निष्पक्ष वैज्ञानिकों ने क्या-२ चेतावनियाँ दीं, डब्ल्यू.एच.ओ. ने कितनी बार अपने विचार बदले, दवा और वैक्सीन का मनुष्यों पर पशुओं की भाँति ट्रायल किया गया और किया जा रहा है। मीडिया तथा सरकारों ने रोगियों को कैसे भयभीत किया, विश्व स्तर पर शीर्ष जिम्मेदार लोगों व संस्थाओं ने कितना झूँठ बोला ? यह सारे संसार ने देखा। संसार के अनेक देशों के अनेकों ईमानदार डॉक्टर्स ने सबको सचेत किया। कोरोना षड्यन्त्र व वैक्सीन के

विरोध में विश्व भर में अनेक प्रदर्शन होते रहे, परन्तु उनकी किसी ने नहीं सुनी। क्या मैडीकल सायंस ने आज तक यह भी नहीं जाना कि भय व आतंक का किसी भी रोगी पर क्या प्रभाव पड़ता है ? मास्क लगाने से ऑक्सीजन की कमी व कार्बन डाई ऑक्साइड की अधिकता के कारण क्या लोगों की प्रतिरोधी क्षमता कम नहीं हुई होगी ? क्या वैक्सीन के कारण अन्य रोगों के प्रति प्रतिरोधी क्षमता में कमी नहीं होगी ? मेरा निश्चित मत है कि कोरोना गाइडलाइन्स के कारण भविष्य में अनेक रोग और अधिक गम्भीरता से फैलेंगे। क्या मैडीकल सायंस यह नहीं जानता अथवा उसकी यथार्थ बातों को छुपाया गया व छुपाया जा रहा है ? महोदय ! विश्व हित में कृपया इस बात की व्यापक जाँच कराने का अनुग्रह करावें।

आपने जिस संगठन को खूंखार आतंकवादी घोषित किया था, उसके सरगना विश्व के मोस्ट वांटेड आतंकवादी थे, आज वही संगठन और वे मोस्ट वांटेड आतकंवादी एक देश पर शासन कर रहे हैं और उनको आतंकवादी घोषित करने वाले देश वा संस्थाएँ न केवल मौन बैठी हैं, अपितु उनका खुलकर आर्थिक सहयोग भी कर रही हैं। कुछ देश अपने देश में आतंकवादियों को पैदा करते हैं, उन्हें संरक्षण देते हैं, दूसरे देशों में आतंकवादी हमले कराते हैं, परन्तु संसार विवश क्यों हो गया, यह मेरी समझ से परे है।

आज कुछ धनी देश निर्धन देशों को आर्थिक सहायता देकर उन्हें अपना दास बना रहे हैं। आज तक विश्व के सबसे बड़े लोकतन्त्र भारत को सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता नहीं मिली। यह उल्लेखनीय है कि इसके कुछ स्थायी सदस्य वे देश भी हैं, जिन्होंने दूसरे देशों पर आक्रमण किए, उन्हें लूटा, उनकी भूमि को छीना, परन्तु भारत, जिसने विदेशी आक्रमण सहे ही हैं, परन्तु किसी पर आक्रमण कभी नहीं किया। भारत ने अपने सामर्थ्यानुसार अन्य देशों का आर्थिक सहयोग सदा किया, परन्तु बदले में उनसे कुछ नहीं चाहा। विश्व में शान्ति स्थापना में भारत के शान्ति सैनिकों ने सदैव अग्रणी भूमिका निभाई। भारत विश्व का जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा बड़ा देश भी है परन्तु फिर भी उसकी अनदेखी की गई। आज विश्व के निर्धन देशों की विकसित देशों के समक्ष क्या कोई भूमिका है ? आज कोई भी

शक्तिशाली देश किसी भी दुर्बल देश को डरा धमका सकता है। **इन सबसे तो ऐसा प्रतीत होता है कि आज सम्पूर्ण विश्व में शक्तिशाली को कोई नियन्त्रित नहीं कर सकता है।** जब पिछले 75-76 वर्ष में यू.एन. ने इन उपर्युक्त विषयों में कुछ विशेष नहीं किया, तो अब आगामी 9 वर्षों में धरती को स्वर्ग बना दिया जाएगा, ऐसा स्वप्न दिखा देना, कहीं गरीब और विकासशील देशों के साथ कोई छल करने की योजना तो नहीं? अथवा **विश्व को कोई ऐसा महामानव मिल गया है, जो इस धरती का सम्राट् बन कर सारी दुनिया को बदल देगा? यदि ऐसा है, तो उस महामानव के विषय में जानने की बहुत उत्सुकता है।**

महोदय! आपके **'एजेण्डा 2030'** के कुछ बिन्दुओं पर मैं आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा –

Goal 2 : End Hunger, achieve food security and improved nutrition and promot sustainable agriculture-

इसमें आपने कृषकों की आय व कृषि उत्पादन में दो गुनी वृद्धि करने और खाद्यान्न व फलों की पोषकता में वृद्धि करने के साथ ही ऐसे बीजों का निर्माण करने, जो विभिन्न प्राकृतिक संकटों में भी अपना अस्तित्व बनाए रखने में सक्षम होवें तथा कृषि को पर्यावरण के अनुकूल बनाने की बात कही गई है। इसके लिए विभिन्न प्रकार के बीजों एवं पौधों के राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बैंक स्थापित करने को, एक उपाय के रूप में दर्शाया गया है। इसमें बात तो आदर्श की है परन्तु उसका उपाय पूंजीवाद को बढ़ावा देने और कृषकों को बीज कम्पनियों का दास बनाने वाला ही होगा। इसमें जीन टेक्नोलॉजी के द्वारा पौधों एवं पशुओं को संरक्षित करने की बात की गई है। **क्या आपका यह विचार पशुओं और वनस्पतियों के लिए विनाशकारी होकर मानव जाति के लिए अभिशाप नहीं होगा।** जेफ़री स्मिथ ने अपने लेख[1] में लिखा है —

An Austrian government study published in November 2018 showed that the more GM corn was fed to mice, the fewer the babies they had (PDF) and the smaller the babies were.

Central lowa farmer Jerry Rosman also had trouble with pigs and cows becoming sterile. Some of his pigs even had false pregnancies or gave birth to bags of water. After months of investigations and testing, he finally traced the problem to GM corn feed. Everytime time a newspaper, magazine or TV show reported jerry's problems, he would receive calls from more farmers complaining of livestock sterility on their farm, linked to GM corn.

In Haryana, India a team of investigating veterinarians report that buffalo consuming GM cottonseed suffer from infertility, as well as frequent abortions, premature deliveries and prolapsed uteruses. Many adult and young buffalo have also died mysteriously.[2]

अर्थात् जी.एम. बीज बांझपन व नपुसंकता को उत्पन्न करने वाले हो सकते हैं।

ऐसी स्थिति में जीन टेक्नोलॉजी द्वारा कृषि को विकसित करके किसानों को धनवान् बनाने की बात कदापि उचित नहीं है, जबकि वास्तविकता यह है कि इससे जीन टेक्नोलॉजी पर काम कर रहे वैज्ञानिकों और बीज कम्पनियों को बढ़ावा देने का ही एक उपाय है और किसानों को बर्बाद करने तथा जी.एम. खाद्यान्न अथवा चारा खाने वाले मनुष्यों एवं पशुओं को रोगी बनाकर फार्मा कम्पनियों को धनवान् बनाने की यह एक योजना मात्र है। इन बीजों व कुछ दवाओं से युवा पीढ़ी को नपुंसक व बांझ बनाया जा रहा है और फिर बांझ निवारण की दुकानों को चलाया जा रहा है अर्थात् दोनों ही ओर व्यापार।

महोदय! मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि हमारे देश में कुछ किसान भारतीय गाय के ताजा गोबर को खाद रूप में प्रयोग करके प्रचुर मात्रा में पौष्टिक अन्न को पैदा कर रहे हैं। इसमें न मँहगे रासायनिक खाद की आवश्यकता होती है और न कीट–नाशक रसायनों की आवश्यकता, ऐसी स्थिति में इस उपाय को संसार

भर के किसानों को क्यों नहीं बताया जा सकता? आज कहीं ऑर्गेनिक खाद के नाम पर जो हो रहा है, वह यद्यपि विषैले रासायनिक खाद की अपेक्षा तो उचित है, परन्तु गाय के ताजे गोबर के समक्ष, यह भी प्रदूषणकारी है। सम्भवत: वर्तमान कृषि वैज्ञानिकों की दृष्टि में पोषण को बढ़ावा देने का उपाय केवल बीजों के जीन्स से छेड़छाड़ करना ही है, जो बहुत भयंकर है। क्या गाय के ताजे गोबर पर ध्यान इसलिए नहीं दिया जा रहा कि इससे किसान किसी कम्पनी पर आश्रित न होकर आत्मनिर्भर बनेंगे, वे धनवान् और स्वस्थ बनेंगे और रासायनिक खाद–बीज तथा कीटनाशक बनाने वाली कम्पनियाँ और परोक्ष रूप से फार्मा कम्पनियाँ बन्द वा नष्ट हो जाएंगी? **क्या संसार के अरबों किसानों की अपेक्षा कुछ पूंजीपतियों को ही सतत विकसित करना अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है? क्या अरबों मनुष्यों और पशुओं को रोगी व दास बनाना मानवता है?** आपसे निवेदन है कि आप कृपया इस बात का सर्वेक्षण कराएं कि कृषि के आधुनिकीकरण के पश्चात् संसार में रोगों की संख्या कितनी बढ़ी है। वस्तुत: जब तक कृषि को पुन: विवेकपूर्ण ढंग से गाय व बैल पर आधारित नहीं बनाया जायेगा, तब तक विनाश का खेल ऐसे ही चलता रहेगा। महोदय! इस कारण आपका गोल न. 2 कभी सफल नहीं हो पायेगा। वस्तुत: यह दूरगामी विनाश ही करेगा।

Goal 3 : Ensure healthy lives and promote well-being for all at all ages-

आपका यह लक्ष्य भी उसी प्रकार का भ्रम दिखाई देता है जिस प्रकार गर्मी में प्यासे मृग को मृगमरीचिका का जल सुन्दर दिखाई देता है, जिसे पाने के लिए मृग दौड़ते–2 प्राण त्याग देता है, लेकिन जल प्राप्त नहीं होता। आपने लोगों को उत्तम स्वास्थ्य देने का आश्वासन दिया है। प्रसूता महिलाओं, छोटे बच्चों व नवजात शिशुओं की मृत्यु को रोकने का स्वप्न दिखाया है, परन्तु 'वोज्शिएक पियोनटेक, भूगोल संस्थान, क्राको, पोलैंड' ने अपने लेख[3] में आपके द्वारा सम्पूर्ण एजेण्डा में कहे गए 'सतत विकास' में जनसंख्या को कम करना अनिवार्य बताते हुए यहाँ तक कहा है –

The most orthodox supporters of the depopulation concept are calling for a reduction in the world population at at least 90%, So that it does not exceed 500 million.[4]

अर्थात् कुछ लोगों का उद्देश्य सम्पूर्ण पृथिवी की जनसंख्या को 90 प्रतिशत तक कम करके केवल 10 प्रतिशत ही रखना है। अहो! कितने क्रूर हैं ये लोग!

इस भयंकर कथन के पश्चात् संसार को वास्तविकता से अवगत कराते हुए एक आधुनिक कथित विकसित व सभ्य संसार का एक बीभत्स उदाहरण प्रस्तुत करते हुए इसी लेखक ने लिखा है –

The Effectiveness of action to promote abortion as a tool af development is evidenced by the fact, according to available estimats, between 1990 and 2016 approximately 1.5 Billion unborn childern were killed, which is more than 20 % at the current Global population. [5]

अर्थात् सन् 1990 से 2016 तक डेढ़ अरब अजन्मे बच्चों को मार डाला गया।

ऐसी स्थिति में आप किन बच्चों को बचाने की बात कर रहे हैं? **क्या यू.एन. कभी यह सर्वे कराने का प्रयास करेगा कि ऐलोपैथी चिकित्सा एवं वैक्सीन के प्रयोग के प्रारम्भ होने के पश्चात् संसार में रोगों की संख्या घटी अथवा बढ़ी? क्या आयु बढ़ना ही स्वास्थ्य का एक लक्षण है? लोग अधिक जीयें, परन्तु जीवन भर औषधी खाकर जीएं, विश्व में अस्पतालों की संख्या बढ़े, फार्मा कम्पनीज् अधिक से अधिक धनवान् होवें, यही विश्व की स्वास्थ्य नीति रह गई है?** क्या वर्तमान में कोरोना का सम्पूर्ण खेल इसी नीति का एक दर्दनाक उदाहरण नहीं है? अमेरिका के एक डॉ. 'Peter R. Bregging' के 134 पृष्ठीय अत्यन्त प्रामाणिक दस्तावेज[6] में इस सम्पूर्ण षड्यन्त्र का खुलासा किया है परन्तु उनकी किसी ने नहीं सुनी, तब हम विश्व को कैसे उत्तम स्वास्थ्य देना चाहते हैं? करोड़ों वर्ष के मानव इतिहास में क्या कभी जनसंख्या नियन्त्रित करने का विचार आया, क्या कभी जनसंख्या इतनी बढ़ी, क्या जनसंख्या कभी समस्या बनी?

तब आज ये समस्याएँ कैसे उत्पन्न हुईं? करोड़ों वर्षों से मनुष्य अपनी प्राकृतिक जीवन शैली, यज्ञ, योग, ध्यान और जड़ी-बूटियों एवं भोजन पर आधारित चिकित्सा के द्वारा स्वस्थ एवं बलवान् रहा है, उसे विशेष औषधियों और वैक्सीन की आवश्यकता नहीं रही। वह तन-मन और आत्मा तीनों से स्वस्थ रहता था, परन्तु क्या वर्तमान चिकित्सा पद्धति ऐसा कर पाई अथवा कर पाएगी? यह ठीक है कि कभी-२ संक्रामक रोगों से बहुत बड़ी जनहानि होती थी, परन्तु जो जीवित रहते थे, वे पूर्ण स्वस्थ और बलवान् ही रहते थे, परन्तु **आज संसार में कितने लोग ऐसे हैं, विशेषकर विकसित देशों में अथवा कथित प्रगतिशील लोग, जो किसी दवा पर आश्रित नहीं है, जो चिन्ता, शोक, अवसाद, भय आदि से ग्रस्त नहीं हैं? जब तक ऐसा नहीं होगा, तब तक मानव समाज को स्वस्थ नहीं माना जा सकता।** पहले जनसंख्या को प्रकृति स्वयं सन्तुलित रखती थी, परन्तु आज मानव स्वयं ही मानव का हत्यारा बन गया है। वह इस मानव समाज को रोगी बनाकर धीरे-२ मारना चाहता है, जिससे दवाएँ और मेडिकल उपकरणों की बिक्री हो सके। **जहाँ अरबों भ्रूण हत्याएँ होती हों, क्या उस समाज को सभ्य माना जा सकता है, जहाँ रोगों के नए-२ वायरस बनाकर के सामूहिक नर संहार की योजना बनती हो, जहाँ वैक्सीन के पीछे कुटिल वा अविवेकपूर्ण उद्देश्य छुपे हों, उस समाज को कैसे वैज्ञानिक व सभ्य कहा जा सकता है?**

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की दृष्टि में **''विज्ञान उसे ही कहते हैं, जो इस सृष्टि के जड़ पदार्थों के सम्पूर्ण ज्ञान के साथ चेतन का भी सम्पूर्ण ज्ञान कराकर सभी प्राणियों का हित करने वाला हो''** क्या आज का कथित वैज्ञानिक युग वास्तव में वैज्ञानिक कहा जा सकता है? जहाँ कुछ लोगों के स्वार्थ के लिए सभी के अधिकार छीनने की दौड़ हो रही हो, वहाँ क्या मानवता जीवित रह पाएगी?

आपने गोल न. 4 में अहिंसा और शान्ति की बात कही है, क्या उपर्युक्त परिस्थिति में अहिंसा की कहीं प्रासंगिकता बची है? जहाँ विश्वभर में करोड़ों पशुओं-पक्षियों और जलचरों की प्रतिदिन हत्या अपनी रस लोलुपता के कारण की

जाती हो, अथवा अपनी आय बढ़ाने के लिए की जाती हो, वहां अहिंसा की बात करना, वैसा ही है, जैसे कि कोई शराबी शराब के नशे में झूमते हुए हाथ में शराब की बोतल लेकर लोगों से शराब छोड़ने पर भाषण दे रहा हो। जहाँ तक जनसंख्या वृद्धि की दर को रोकने का प्रश्न है, उसके लिए आज विश्व में आधिकारिक रूप से जो कृत्रिम साधन अपनाए जा रहे हैं, उन्होंने न केवल मानव समाज को उच्छृंखल बनाकर न केवल पशु से भी नीचे गिरा दिया है, अपितु उन्हें अनेक मानसिक और शारीरिक रोगों से ग्रस्त भी बना दिया है। इनके प्रयोग से संसार भर में यौन अपराधों में भारी वृद्धि भी हो रही है। जनमानस इन सारी पीड़ाओं को भले ही भोग रहा हो, तो कोई अपने अज्ञानता के कारण दु:खों में सुख का अनुभव भले ही कर रहा हो, परन्तु अनेक फार्मा कम्पनियाँ, डॉक्टर्स, कृत्रिम गर्भनिरोधक साधनों के निर्माता अवश्य फल-फूल रहे हैं। **आज का कथित सभ्य मानव स्वयं को अमर बनाने का प्रयास कर रहा है तथा अजन्मे बच्चों को गर्भ में मार रहा है अथवा गर्भधारण को ही रोक रहा है और भोग विलास पूरा कर रहा है। यह ऐसी ही स्थिति है, जहाँ कोई रेल यात्री स्वयं सीटों पर मजे करे और किसी नये यात्री को आने न दे। क्या यही विकास है? यही सभ्यता है?**

वेद में भी सीमित सन्तान का उपदेश किया गया है और इसके लिए मनुष्य को संयमित जीवन जीने का उपदेश किया गया है, इससे मानव समाज स्वस्थ और अपराध मुक्त भी होगा और उसके धन का अनावश्यक व्यय भी नहीं होगा, तब क्या ये सभी साधन केवल कम्पनियों को लाभ पहुँचाने के लिए हैं? यह एक गम्भीर प्रश्न है।

Goal 4 : Ensure inclusive and equitable quality education and promote lifelong learning opportunities for all-

इसके अन्तर्गत सूचना प्रौद्योगिकी के विकास की विशेष चर्चा की गई है। इसके साथ ही उच्च स्तरीय शिक्षा, टेक्नोलॉजी और वैज्ञानिक कार्यक्रम चलाने की बात की गई है।

महोदय! किसी भी टेक्नोलॉजी का मूल आधार सैद्धान्तिक भौतिक विज्ञान ही होता है, लेकिन पिछले लगभग 2 दशक में सैद्धान्तिक भौतिकी में कोई बड़ा आविष्कार नहीं हुआ है और विश्व के वैज्ञानिक अब तो इस बात को लेकर निराश भी होने लगे हैं। इसकी एक झलक सी.ई.आर.एन. की वेबसाईट पर इस प्रकार देखी जा सकती है –

...without new discoveries it's hard to keep a younger generation interested. If both the LHC and the upcoming cosmological surveys find no new physics, it will be difficult to motivate new theorists. If you ddon't know where to go or what to look for, it's hard to see in which direction your research should go and which ideas you should explore...[7]

अर्थात् नये शोध के अभाव में युवाओं को कैसे भौतिकी की ओर आकर्षित किया जाए, यह चिन्ता की बात है।

ऐसी स्थिति में यह एक गम्भीर प्रश्न उठ खड़ा होता है कि **संदिग्ध और अपूर्ण थ्योरीज् के आधार पर विकसित कोई भी टेक्नोलॉजी क्या कभी निरापद हो सकती है?**

आज संसार में जो भी टेक्नोलॉजी विद्यमान है अथवा जिसका भी आविष्कार किया जा रहा है, क्या उनमें से कोई भी टेक्नोलॉजी अथवा कोई भी औषधि वा रसायन ऐसा है, जो शरीर, मन और पर्यावरण पर कोई दुष्प्रभाव नहीं डालता हो? क्या आज विश्व में हजारों वैज्ञानिक इन टेक्नोलॉजी आदि के दुष्प्रभाव का अध्ययन नहीं कर रहे हैं? क्या इसी में अरबों डॉलर खर्च नहीं हो रहे हैं? पहले अपूर्ण थ्योरी की खोज में धन और समय खर्च करना, फिर उनके दुष्प्रभावों को खोजने में धन और समय का खर्च करना, फिर अन्य थ्योरीज् और टेक्नोलॉजी में धन और समय नष्ट करना, **यह अबोध बच्चों का खेल कब तक चलता रहेगा? क्या यह सब कुछ पूँजीपतियों, जो सम्पूर्ण पृथिवी की सम्पदा के स्वामी बन कर अमर जीवन जीना चाहते हैं, का ही खेल नहीं?**

महोदय! मेरी दृष्टि में वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी, जीन टेक्नोलॉजी, वायरोलॉजी, उर्वरक, फार्मा उद्योग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कीटनाशक रसायन, जैसी आधुनिक विद्याएँ पृथिवी के सम्पूर्ण विनाश का कारण बनने वाली हैं। आज इसका गम्भीर दुष्प्रभाव वैज्ञानिकों को अनुभूत नहीं होगा अथवा इनसे सम्बद्ध लोभी पूँजीपति एवं कम्पनियाँ उन्हें दबाएँ रखेंगी, परन्तु एक दिन विस्फोटक स्थिति अवश्य बनेगी, तब तक परिस्थितियाँ हाथ से निकल जाएंगी। **आज जिन रेडियो तरंगों के भयानक जाल द्वारा हम स्पेस को प्रदूषित कर रहे हैं और विकास की अंधी दौड़ में निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं, वही दौड़ हमारी मृत्यु का कारण बनेगी।** वर्तमान भौतिक वैज्ञानिक न तो स्पेस के स्वरूप और संरचना एवं उसके घटकों के विषय में कुछ जानते हैं और न रेडियो तरंगों की संरचना और उसके घटकों के विषय में कुछ विशेष जानते हैं। ऐसी स्थिति में सूचना प्रौद्योगिकी का अन्धाधुन्ध प्रयोग उसी प्रकार का विनाशकारी पागलपन है, जिस प्रकार किसी वाहन चालक के द्वारा रोड और वाहन दोनों के स्वरूप और संरचना आदि को कुछ भी जाने बिना इधर-उधर वाहन दौड़ाना विनाशकारी पागलपन होता है। इसी उदाहरण से प्रत्येक टेक्नोलॉजी के अविवेकपूर्ण प्रयोग की विभीषिका को समझा जा सकता है।

महोदय! संसार भर में जड़वादियों की दृष्टि में विद्या की जो भी शाखाएँ विद्यमान हैं, उनमें विज्ञान का सर्वोपरि स्थान है और विज्ञान में भी भौतिक विज्ञान अन्य विज्ञानों का मूल है। हम यह दृढ़ता से कहना चाहते हैं कि जब भौतिक विज्ञान ही अनेक दृष्टि से असहाय,भ्रमित एवं निराश है, तब विज्ञान की किसी भी शाखा का तकनीकी प्रयोग कभी निरापद नहीं हो सकता। हम इस विषय में यह भी कहना चाहेंगे कि **आधुनिक भौतिक विज्ञान मूल कण, फोटोन, डार्कमैटर, डार्क एनर्जी, स्पेस, द्रव्यमान, विद्युत् आवेश एवं मूल बल आदि के विषय में जहाँ तक भी जानता है, हम अपनी वैदिक भौतिकी के द्वारा (वस्तुतः हम सभी धरती-वासियों के महान् पूर्वज वैदिक ऋषिमुनियों और वेदों की सनातन भौतिकी) इतना कुछ विज्ञान दे सकते हैं, जो विश्व के वर्तमान वैज्ञानिक आगामी 50-100 वर्षों में भी शायद ही खोज सकें।**

महोदय! आज टैक्नोलॉजी को ही विज्ञान बताने और प्रचारित करने का जो योजनाबद्ध प्रवाह चल रहा है, वह विश्व के कुछ एक पूँजीपतियों का ही दुष्प्रचार माना जा सकता है। इसका कारण यह है कि टेक्नोलॉजी इसकी निर्माता कम्पनियों को धनवान् बनाने का एक बड़ा साधन है। इसके अंधाधुन्ध प्रयोग से मनुष्य को विलासी और रोगी बनाकर फार्मा कम्पनीज् और चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों और संस्थाओं को भी अतिरिक्त आर्थिक लाभ मिल जाता है, तब ये लोग क्यों नहीं संसार भर के देशों की सरकारों और नागरिकों को सुविधाओं के व्यामोह में फंसाएंगे? **वस्तुतः सरल जीवन का नारा हमारे विनाश को भी सरल बना रहा है। हमारे पूर्वज तपस्वी हुआ करते थे, न कि सुविधाभोगी विलासी।**

यदि सम्पूर्ण विश्व वैदिक भौतिकी के द्वारा सृष्टि को समझने का प्रयास करे और जड़ पदार्थों के साथ चेतन पदार्थों के विज्ञान को भी ठीक-२ समझने का प्रयास करे, तो **संसार को विनाश से बचाया जा सकता है** और वर्तमान भौतिकी की भी अनेक गम्भीर समस्याओं को सुलझाया जा सकता है। इसके साथ ही विज्ञान को नई परन्तु यथार्थ ऊँचाइयों पर भी पहुचाँया जा सकता है, जिसमें सब कुछ सर्वहित में ही होगा।

आपने विकसित देशों से कम विकसित देशों में योग्य शिक्षक भेजने की जो बात की गयी है, क्या वे अपनी शिक्षा के साथ-साथ अपनी सभ्यता व सम्प्रदाय को भी प्रचारित करके अन्य देशों को अपना बौद्धिक दास बनाने का कार्य तो नहीं करेंगे? संसार में विभिन्न सम्प्रदायों के प्रसार का यही दु:खद इतिहास रहा है।

Goal 5 : Achieve gender equality and empower all woman and girls-

इसमें आपने लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण के संकल्प को अभिव्यक्त किया है, इसके लिए आपने महिलाओं की आर्थिक स्रोतों में बराबरी, भूमि आदि में भागीदारी और सभी स्तरों पर उनके नेतृत्व की सहभागिता आदि उपाय सुझाए हैं।

महोदय! हम इस विषय में जानना चाहेंगे कि क्या यू.एन. इस बात का सर्वे करवाएगा कि संसार के ऐसे देश, जो महिलाओं के अधिकार की बात को जोर शोर से उठाते हैं, उनमें से कितने देशों में अब तक कितनी महिला प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति बनीं? कितने देशों में महिलाओं को सामाजिक और धार्मिक अधिकार रहे हैं? और यदि रहे हैं, तो कब से? संसार में जितने भी मत सम्प्रदाय हैं, उनकी आधारभूत पुस्तकों में यदि महिलाओं के विरुद्ध शोषण वा अत्याचार की बातें हों, तब उन ग्रन्थों और उन सम्प्रदायों पर संयुक्त राष्ट्र संघ क्या करेगा? यह भी जानने की हमारी इच्छा है।

प्राचीन भारतीय वैदिक समाज में अनेक ऋषिका महिलाएं अर्थात वैज्ञानिक हुईं, राजा के साथ रानी की भी सहभागिता सदैव रही, परन्तु अन्य देशों की क्या स्थिति रही? महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में भगवती सीता, वीरांगना महारानी कैकेयी, माता कुन्ती, महारानी दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई, अहिल्या बाई, जीजा बाई आदि भारतीय समाज के ज्वलन्त उदाहरण हैं। हमारे इस समाज में पति-पत्नी एवं सभी परिवारजनों के बीच आस्था, विश्वास और प्रेम का अटूट सम्बन्ध हुआ करता था, सम्पत्ति का कोई बँटवारा नहीं होता था। आज भी भारतीय ग्रामीण जीवन में पुरुष कमाता है और उस धन को अपनी पत्नी को ही सौंप देता है, फिर दोनों प्रेम से मिलकर परिवार को चलाते हैं। उनमें कोई बंटवारा नहीं होता। यहाँ स्त्री को पुरुष की अर्द्धांगिनी कहा जाता है। प्रत्येक धार्मिक कार्य में दोनों की सहभागिता होती है। यहाँ वृद्धों को वृद्धाश्रमों में नहीं भेजा जाता है। अनचाहे बच्चे नहीं होते हैं। दुर्भाग्य से आज पश्चिमी देशों के कानूनों की काली छाया भारत में भी पड़ने लगी है। वस्तुत: आपकी सारी योजनाएँ परिवारों के विखण्डन और सामाजिक अवधारणा को पूर्ण ध्वस्त करने के लिए ही हैं और **इससे सम्पूर्ण विश्व 'लिव-इन-रिलेशन' की पशुता में गिर जाएगा।**

महोदय! आज सर्वत्र अधिकारों की आग में मनुष्य को धकेलने के प्रयास किए जा रहे हैं परन्तु कर्त्तव्य और नैतिकता की आज के कथित सभ्य समाज में कोई चर्चा नहीं है। वस्तुत: **आज संसार को वैदिक संस्कृति से अधिकार और कर्त्तव्य**

के सन्तुलन तथा योग्यता और प्रकृति पर आधारित न्याय का पाठ सीखाना चाहिए।

Goal 7 : Ensure access to affordable, reliable, sustainable and modern energy for all -

आज संसार में ऊर्जा के अत्यधिक उत्पादन और उपभोग को विकास का मानदण्ड मान लिया गया है। इसका अर्थ यह है कि जो व्यक्ति जितना भोगी और विलासी है, वही विकसित माना जाता है और त्यागी और सादगीपूर्ण व्यक्ति को पिछड़ा माना जाता है। यही कारण है कि आज विकसित और सभ्य कहा जाने वाला मनुष्य भोगों की स्पर्धा में पशु–पक्षियों को भी बहुत पीछे छोड़ चुका है। प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से पृथिवी और समुद्रों का पारिस्थितिक तन्त्र विनाशकारी स्तर तक बिगड़ चुका है। आज निरापद ऊर्जा के उत्पादन पर आविष्कार हो रहे हैं परन्तु कोई भी सादगी और त्यागमय जीवन जीने की बात नहीं करता। इस गलाकाट प्रतिस्पर्धा में अमीरी और गरीबी के बीच की दूरी इतनी बढ़ गई है कि आर्थिक समानता का आपका वचन कभी पूरा नहीं हो सकता। जहाँ तक मैं समझ सकता हूँ, आपके इस वचन में भी कहीं कुछ छल अथवा अविवेक दिखाई देता है। एक यह बिन्दु भी विचारणीय है कि आज जिसे स्वच्छ ऊर्जा माना जाएगा, भविष्य में उसका कोई भयंकर दुष्प्रभाव अवश्य ज्ञात हो जाएगा। अब तक का इतिहास तो यही रहा है। वस्तुतः जो प्रदूषण हम नहीं देख सकते, उसे हम प्रदूषण ही नहीं मानते, यह हमारी नादानी व अदूरदर्शिता ही है।

महोदय! एक बात अत्यन्त महत्व की है कि हम ऊर्जा की पूर्ति के लिए पृथिवी से कोयला, यूरेनियम, पैट्रोलियम आदि का दोहन कर रहे हैं, वे पदार्थ क्या पृथिवी के गर्भ में किसी अन्य प्रयोजन से तो ईश्वर ने नहीं भरे हैं? क्या इनके निकलने से पृथिवी का पारिस्थितिक तन्त्र दुष्प्रभाव का शिकार नहीं होगा? मेरे विचार से यह दोहन पृथिवी के स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक होगा। विश्व भर के वैज्ञानिकों को इस पर शोध करना चाहिए। हमें ऊर्जा का कम से कम ही उपयोग करना चाहिए, अन्यथा हम सब मिटने वाले हैं। सोलर ऊर्जा को प्राप्त करने की वर्तमान

पद्धति में सोलर प्लेट्स भी भविष्य में प्रदूषण को बढ़ाकर रोगकारिणी ही सिद्ध होंगी। वस्तुत: वृक्षों को काट कर लकड़ी से प्राप्त ऊर्जा ही सबसे कम हानिकारक होगी और यह कभी न समाप्त होने वाला स्रोत है। वृक्ष लगाकर हम इसे सदा ही बनाये रख सकते हैं। पशु ऊर्जा, गोबर से प्राप्त ऊर्जा आदि भी स्थायी स्रोत हैं, परन्तु इन्हें मिटाया जा रहा है। सौर ऊर्जा प्राप्त करने की किसी अन्य निरापद तकनीक का शोध महत्वपूर्ण होगा। पवन ऊर्जा को प्राप्त करने की निरापद पद्धति का व्यापक विकास करना होगा। इतने पर भी ऊर्जा की खपत कम से कम ही करनी होगी। हमें तपस्वी बनना होगा।

वेद का उपदेश है कि प्रत्येक धनी अपनी सम्पत्ति को ईश्वर और समाज की समझे और उसका त्यागपूर्वक सीमित उपयोग ही करे। इसके साथ ही प्रत्येक निर्धन व्यक्ति धनी से ईर्ष्या न करके अपने परिश्रम पर ही विश्वास करे और कष्टों को भी हंसता हुआ सहन करे। उधर धनी निर्धनों पर करुणा करते हुए अपने धन को राष्ट्र वा विश्व हित में समर्पित करे। विश्व में केवल इसी विचार से शान्ति स्थापित हो सकती है।

गोल न. 8 में आपने श्रमिकों के अधिकारों की सुरक्षा की बात कही है परन्तु बढ़ते हुए यन्त्रीकरण से श्रमिकों का जीवन सुरक्षित ही कहाँ रहेगा? आज सम्पूर्ण टेक्नोलॉजी केवल पूँजीपतियों के हित को साधने के लिए है। आज न केवल श्रमिकों, अपितु कृषकों, छोटे व्यापारियों एवं मध्यम वर्ग का भविष्य संकट में जाता प्रतीत हो रहा है। छोटे उद्योगपतियों को भी बड़ी-2 कम्पनियाँ खा जाएंगी।

गोल न. 9 और 10 के कुछ बिन्दुओं पर हम चर्चा कर ही चुके हैं। फिर भी इतना अवश्य निवेदन करना चाहते हैं कि आज व्यक्ति से लेकर बड़े-२ देशों तक, जो अनावश्यक ऋण और अनुदान लेने वा देने का जो फैशन चल पड़ा है, वह सभी को पराधीनता के जाल में फंसाने के लिए ही है। इससे गरीब व कमजोर देश अमीर व शक्तिशाली देशों के सदा लिए दास बन जाएंगे तब कोई क्या करेगा? आज विश्व में ऐसा भी देखा जा रहा है कि शक्तिशाली देश कर्जदार होकर भी किसी भी देश को आँखे दिखाने लगते है। वस्तुत: लेन-देन में न्याय रहा भी कहाँ

है ? **यदि भारत के महान् आचार्य चाणक्य की बात 'ऋणस्यकर्ता पिता शत्रुः' को संसार मान लेता, तो अनावश्यक ऋण व अनुदान की विनाशकारिणी प्रवृत्ति में कोई भी देश वा मनुष्य नहीं फंसता।**

Goal 11 : Make cities and human settlements inclusive, safe, resilient and sustainable-

आपने इस लक्ष्य के अन्तर्गत शहरीकरण की प्रक्रिया को तेज करने की बात की है, इससे ऐसा प्रतीत होता है कि ग्रामीण लोगों को शहरों में बसा कर उन्हें कुछ आजीविका देकर, उन्हें कृषि व पशुओं से दूर कर दिया जायेगा, अन्यथा शहरीकरण की प्रक्रिया को तेज करने का अर्थ ही क्या है ? आज विश्व में वैसे भी शहरीकरण बहुत तेजी से हो रहा है और यह भी सत्य है कि स्वास्थ्य के लिए स्वस्थ और प्राकृतिक वातावरण शहरों की अपेक्षा गाँवों में ही मिल सकता है। ग्रामीण व्यक्ति अन्न, दूध, फल, और शाक आदि की दृष्टि से आत्मनिर्भर होता है और इनके समुचित प्रयोग से वह शहरी व्यक्ति की अपेक्षा अधिक स्वस्थ व बलवान् भी रह सकता है। ग्रामीण व्यक्ति अपनी स्वतन्त्रतापूर्वक आजीविका अपनी कृषि और पशुपालन के द्वारा प्राप्त कर सकता है और करता भी है। दुर्भाग्य से बढ़ते यन्त्रीकरण ने किसानों की जीवनशैली को सुविधाभोगी, रोगकारक और व्ययसाध्य बना दिया है। इससे जहाँ पर्यावरण प्रदूषण में वृद्धि हुई है, वही किसान की आत्मनिर्भरता भी धीरे-२ समाप्त हो रही है। ऐसी स्थिति में ग्रामीण क्षेत्रों को शहरी जीवन का आकर्षण देना दुर्भाग्यपूर्ण ही होगा। आज जब महानगरों में वायु प्रदूषण एवं तनाव भरे जीवन से परेशान होकर शहरी लोग गाँव, वनों और पर्वतों का पर्यटन करके मन को शान्त करने का प्रयास करते हैं, तब ऐसी स्थिति में वनों, पर्वतों और गाँव में रहने वालों को अशान्त, दुःखी और पराधीन रखने का विचार नितान्त अनुचित है। कहीं ऐसा तो नहीं है कि शहरी लोगों को नियन्त्रित करने वा दास बनाने में अधिक सरलता होती है, अपेक्षाकृत ग्रामीण लोगों के, इसी कारण शहरीकरण को बढ़ावा देने की योजना बनाई गयी है। इस बार विश्व ने देखा है कि कोरोना के कारण शहरों में ही मृत्यु अधिक हुई है, तब भी शहरीकरण कैसे उचित प्रतीत होता है ? यदि आप वास्तव में ग्रामीणों को सुखी व सम्पन्न बनाना, चाहते हैं, तो उन्हें कृषि व पशुपालन

पर आधारित विवेकपूर्ण अर्थव्यवस्था की शिक्षा देनी होगी, जिसमें सब कुछ प्रकृति के अनुकूल ही होवे।

Goal 13 : Take urgent action to combat climate change and its impacts

निश्चित ही जलवायु परिवर्तन इस समय पृथिवी के लिए बहुत बड़ी समस्या है परन्तु मुझे यह प्रतीत होता है कि इसके जो कारण बताए जा रहे हैं, वे अर्धसत्य और अदूरदर्शी हैं और इसके पीछे कोई अन्य एजेण्डा भी प्रतीत होता है।

महोदय! इस वर्ष का भौतिक विज्ञान का नोबल पुरस्कार भी जलवायु परिवर्तन से जुड़ा हुआ है। पुरस्कार पाने वाले तीन वैज्ञानिक[८] हैं। मैं 2017 से भौतिकी के नोबल पुरस्कार प्राप्त कर्ताओं के कार्य को देखता रहा हूँ, **मुझे यह प्रतीत होता है कि विश्व के भौतिक वैज्ञानिकों के पास भौतिक विज्ञान में शोध करने के लिए कुछ शेष नहीं रह नहीं गया है। इसलिए वे बासे भोजन को गर्म करके खाने को ही बड़ा अनुसंधान मानने लग गए हैं और उस पर नोबल पुरस्कार भी मिल जाता है।** 2017 में गुरुत्वीय तरंगों की खोज पर नोबल पुरस्कार दिया गया था, उस पर मैंने 9 प्रश्न उन तीनों वैज्ञानिकों, नोबल फाउण्डेशन,नासा,एवं सर्न के अतिरिक्त विश्व के 27 देशों के शीर्ष 40 विश्वविद्यालयों के भौतिक विज्ञान विभागों को भेजे थे,परन्तु किसी के पास मेरे प्रश्नों के उत्तर नहीं थे। नासा ने प्रश्नों के उत्तर से बचना ही उचित समझा परन्तु मुझे मेल अवश्य भेजा। एक नोबल पुरस्कार विजेता ने मुझे लिखा –

Unfortunataly, I am so overwhelmed that I am unable to answer questions at this time and most likely not until 2018.

अर्थात् मैं आपसे अभिभूत हूँ परन्तु दुर्भाग्य से मैं आपके प्रश्नों का उत्तर देने में असमर्थ हूँ, विशेषकर सन् 2018 तक।

मेरे यह कहने पर कि मैं इन सभी प्रश्नों के उत्तर अपनी वैदिक भौतिकी से दे

सकता है, पर सभी मौन ही रहे। इस वैज्ञानिक महोदय से 2018 सन् बीतने के पश्चात् पुन: मैंने उत्तर जानने चाहे, तब वे मौन हो गए। इससे विदित होता है कि **वर्तमान विज्ञान कहीं न कहीं पूर्वाग्रह और पक्षपात की नींव पर खड़ा है, अन्यथा उन्हें इन प्रश्नों के उत्तर पाने की इच्छा क्यों नहीं होती?**

2019 का भौतिकी का नोबल आधुनिक भौतिकी के सबसे बड़े और सबसे अधिक बोले जाने वाले झूँठ (बिग-बैंग मॉडल) पर मिला। 2020 का ब्लैक होल विषय पर मिला, जिस पर अनेकों प्रश्न भारतीय खगोल शास्त्री डॉ. आभास मित्रा ने उठाए थे और कुछ प्रश्न मैंने भी। इन प्रश्नों के पश्चात् ब्रिटिश वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिन्स ने ब्लैक होल के विषय में अपने विचारों में बहुत परिवर्तन किया था परन्तु उन्होंने कहीं भी डॉ. मित्रा जी का नाम नहीं लिया। तब कहाँ है, सत्य की स्वीकार्यता? इस बार का नोबल तो विषय से ही भटक गया। इन वैज्ञानिकों ने जलवायु परिवर्तन के लिए कार्बनडाई ऑक्साइड को उत्तरदायी बताया है और अपने कुछ मॉडल प्रस्तुत किए हैं। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि जलवायु परिवर्तन के लिए कार्बनडाई ऑक्साइड की अपेक्षा अन्य घातक कारकों को छोड़ कर कार्बनडाई ऑक्साइड पर शोध को प्रधानता देना और उस पर नोबल पुरस्कार देकर कार्बनडाई ऑक्साइड से संसार को भयभीत करना, **क्या किसी योजना का भाग तो नहीं है?**

'प्राकृतिक संसाधन रक्षा परिषद' में छपे लेख[9] के अनुसार जलवाष्प के अतिरिक्त 4 गैसें ग्रीनहाउस प्रभाव उत्पन्न करती हैं, जिसमें सबसे अधिक घातक प्रभाव करने वाली फ्लोरिनेटेड गैसें हैं, वायुमण्डल में जिनकी मात्रा भले ही कम है परन्तु धरती का ताप बढ़ाने में इनकी भूमिका कार्बनडाई-ऑक्साइड की अपेक्षा 1000-10,000 गुनी अधिक है। तब इसकी चर्चा कोई क्यों नहीं करता? यह गैस आधुनिक टेक्नोलॉजी की देन है। इससे कम ऊष्मा उत्पन्न करने वाली गैस नाइट्रस ऑक्साइड है, यह भी कार्बनडाई-ऑक्साइड की अपेक्षा 300 गुना प्रभाव दर्शाती है, उसकी भी चर्चा प्राय: कम होती है। चर्चा मीथेन और कार्बनडाई-ऑक्साइड की ही होती है। मीथेन, कार्बनडाई-ऑक्साइड से 25 गुना परन्तु फ्लोरिनेटेड गैसें

की अपेक्षा मात्र 1/40 से लेकर 1/400 भाग ही ऊष्मा का प्रभाव दर्शाती है परन्तु इसको लेकर भी बहुत शोर मचाया जाता है और पालतू पशुओं को निशाना बनाया जाता है। **कुछ लोग विगन के नाम पर, तो पेटा से जुड़े कोई लोग योजनाबद्ध तरीके से पशुओं पर दया का झूंठा आवरण ओढ़कर उन्हें पालने से पशुपालकों को दूर करते हैं।** जहाँ तक कार्बनडाई-ऑक्साइड की बात है, तो इसका ग्रीन हाउस प्रभाव सबसे कम है, परन्तु इसे जलवायु परिवर्तन में सबसे हानिकारक जैसा दर्शा कर अपनी भौतिकी की परम्परा से हट कर, इस पर नोबल पुरस्कार दिया जाता है, ताकि सारे संसार का ध्यान इसी की ओर खींचा जा सके। **मुझे भय है कि भविष्य में इसी कृत्रिम भय से भयभीत करके गरीबों को लकड़ी का चूल्हा जलाने, वैदिक यज्ञ-हवन करने, हिन्दुओं की पूजा पद्धत्ति पर चोट करने और उनके अन्त्येष्टि संस्कारों पर भी हमला करने के लिए नए-२ कानून बनाए जा सकते हैं, उन्हें कार्बनडाई-ऑक्साइड बढ़ने का भय दिखाया जा सकता है। यह बात महत्वपूर्ण है कि सभी गैसों की अपेक्षा कार्बनडाई-ऑक्साइड का वायुमण्डल में रहना अनिवार्य है, अन्यथा वनस्पति जगत् समाप्त हो जाएगा, सम्पूर्ण कार्बन चक्र बिखर जायेगा और इसके अभाव में कोई भी प्राणी जीवित नहीं बच पाएगा।** यदि यहाँ यह प्रश्न उठे कि वायुमण्डल में कार्बनडाई-ऑक्साइड की मात्रा अधिक होने से इसकी वृद्धि को रोकना ही अनिवार्य है, तब यह तर्क भी मिथ्या है।

एक लेख[10] में छपे आकड़ों पर दृष्टि डालें, तो यू.एस.ए. के 2019 के आकड़ों के अनुसार इन गैसों का प्रतिशत इस प्रकार है -

CO_2 = 80 %
CH_4 = 10 %
नाइट्रस ऑक्साइड = 7 %
फ्लोरिनेटेड गैसें = 3 %

यदि हम कार्बनडाई-ऑक्साइड का ताप प्रभाव 'A' मानें, तब इन गैसों का इस पृथिवी पर ऊष्मा प्रभाव इस प्रकार सिद्ध होता है -

कार्बनडाई–ऑक्साइड का ताप प्रभाव	=	A
मीथेन का ताप प्रभाव	=	25/8 A
नाइट्रस ऑक्साइड का ताप प्रभाव	=	52.5 A
फ्लोरिनेटेड गैसें का ताप प्रभाव	=	75/2 A से लेकर 375 A

इतने पर भी कार्बनडाई–ऑक्साइड को लेकर भयभीत करना क्या न्यायसंगत है ? **क्या यह मानवता है, ईमानदारी है ? यहाँ कोई लकड़ी जलाने से वृक्षों के विनाश की आशंका व्यक्त करे, तो उसके उत्तर में मैं निवेदन करना चाहूँगा कि वृक्षों पर यह मनुष्य उसकी उत्पत्ति से अर्थात् करोड़ों वर्षों से जुड़ा रहा। वृक्ष काटता भी रहा और उन्हें उगाता भी रहा, परन्तु कभी कार्बनडाई–ऑक्साइड पृथिवी के पर्यावरण तंत्र के विनाश का कारण नहीं बनी।** 'प्राकृतिक संसाधन रक्षा परिषद' में प्रकाशित लेख[11] के अनुसार हम पिछले 40 वर्षों में, सन् 1750 से 2010 तक अर्थात् 260 वर्षों में उत्सर्जित कार्बनडाई–ऑक्साइड की अपेक्षा लगभग आधी मात्रा में उत्सर्जित कर चुके हैं। तब कार्बनडाई–ऑक्साइड के लिए लकड़ी के चूल्हे, यज्ञ–हवन वा हिन्दुओं के अन्तिम संस्कार आदि उत्तरदायी नहीं, बल्कि वर्तमान में हो रहा कथित विकास ही उत्तरदायी है। फिर कार्बनडाई–ऑक्साइड जीवन के लिए अनिवार्य भी है। ध्यातव्य है कि कार्बनडाई–ऑक्साइड की अधिकता नहीं, बल्कि ऑक्सीजन की न्यूनता हमारे लिए घातक होती है। आज की सम्पूर्ण टेक्नोलॉजी ऑक्सीजन के विनाश का कारण है, तब भी हम टेक्नोलॉजी की ओर पागल की भाँति भाग रहे हैं, इस पर भी कार्बनडाई–ऑक्साइड को लेकर चीखते हैं।

'द गार्डियन' में प्रकाशित एक लेख[12] के अनुसार 125 million टन कार्बनडाई–ऑक्साइड का उत्सर्जन प्रतिवर्ष केवल मोबाइल के प्रयोग से होता है।

'रीबॉक्स्ड' वेबसाइट पर प्रकाशित लेख[13] में आई फोन के विभिन्न मॉडल्स के उत्पादन, परिवहन, प्रयोग और रिसाईकलिंग से CO_2 उत्सर्जन होने के सम्पूर्ण आकड़े दर्शाए गए हैं और इधर सम्पूर्ण मानव समाज को मोबाइल पर ही निर्भर कर दिया गया है, तब CO_2 की वृद्धि के लिए उत्तरदायी कौन है ? **इन तरंगों से कैंसर**

होता है, तो होने दो, आँखें नष्ट हो जाएं, तो कोई बात नहीं, बच्चों का जीवन नर्क बने, तो बनता रहे परन्तु विकास की दौड़ में पीछे नहीं रहना है, वाह! क्या बुद्धिमानी है?

एक अन्य लेख[14] अनुसार 2019 में यू.एस.ए. में CO_2 के उत्सर्जन के स्रोत इस प्रकार दिए हैं –

Transportion	=	35 %
Electricity	=	31 %
Industry	=	16 %
Residential and Commercial	=	11 %

अब इनमें से वर्तमान कथित विकास में इन स्रोतों को कौन नियन्त्रित कर सकता है? क्या यह विकास ही CO_2 की वृद्धि का सबसे बड़ा कारण नहीं है? क्या इस पर रोक लगाने पर यू.एन. कुछ विचार करेगा?

एक लेख[15] के अनुसार–

'In 2019, total US electricity generation by the electric power industry of 4.13 trillion kilowatthours (kwh) from all energy sources resulted in the emission of 1.72 Billion metric tons 1.90 Billion short tons of carbon dioxide. This equaled about 0.90 pounds of co_2 emission per kwh'

अर्थात् केवल अमेरिका में सन् 2019 में विद्युत् उत्पादन से 1.72 अरब मीट्रिक टन CO_2 उत्सर्जित हुई।

महोदय! क्या ये सब आकड़े यह दर्शाने के लिए पर्याप्त नहीं कि जिस वृद्धि का भय दिखाया जा रहा है वह भी आधुनिक विकास की ही देन है। **यदि संसार के धनी देश और संसार के सभी धनी व्यक्ति विद्युत् एवं मोबाइल इण्टरनेट,वाहन आदि सुख सुविधाओं में यदि आधी भी कटौती कर दें एवं**

सभी लोग इनका अनावश्यक प्रयोग बन्द कर दें, तो संसार को बचाया जा सकता है। वे परम्परागत और प्राकृतिक जीवन शैली अपनाएं, तो इस धरती पर कभी कोई संकट नहीं आ सकता। क्या इस विषय में कोई कुछ विचार करेगा? क्या कोई सबसे घातक फ्लोरिनेटेड गैसों के उत्सर्जन को बन्द करने के तैयार होगा? क्या विकासवाद की अंधी दौड़ व बढ़ते शहरीकरण पर विराम लगेगा? यदि नहीं, तो जलवायु परिवर्तन की बात करना ही सर्वथा निरर्थक है। **आज मुझे यह प्रतीत होता है कि विश्व के राजनेताओं के शिखर सम्मेलन तो किसी पिकनिक से अधिक नहीं हैं। मीथेन पर शोर मचाने वाले यदि गोबर गैस संयन्त्रों का प्रचार करें, तो विश्व के सभी गाँव विद्युत्, रसोई के ईंधन व खाद की दृष्टि से आत्मनिर्भर बन जायेंगे, तब कितनी ऊर्जा की बचत होगी परन्तु गरीबों को आत्मनिर्भर बनाने की चिन्ता किसे है? सबको कुछ पूँजीपतियों को समृद्ध करने की ही चिन्ता है।** हम यह भी जानते हैं कि मृत्यु अवश्यम्भावी है तथा धन की प्यास कभी मिटने वाली भी नहीं है, फिर भी धन के लिए ऐसी क्रूरता?

महोदय! मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि वर्तमान पर्यावरण वैज्ञानिकों को 'पर्यावरण', जो संस्कृत भाषा का शब्द है, उसके अर्थ का भी पूर्ण ज्ञान नहीं है। वे केवल मिट्टी, पानी और हवा को ही पर्यावरण समझते हैं और इनके तापमान को नापने से ही इनका पर्यावरण विज्ञान पूर्ण हो जाता है। वस्तुतः ये तीनों तो हमारे पर्यावरण के बहुत ही स्थूल भाग हैं और इनसे सूक्ष्म भागों का तो किसी को कोई ज्ञान ही नहीं है। आज इन तीनों से सूक्ष्म पदार्थ स्पेस अनेक प्रकार की मानव निर्मित रेडियो वेव्स से प्रदूषित हो चुका है। **जन्मते बच्चे से लेकर मरते हुए वृद्ध व्यक्ति तक इसी प्रदूषण में खेलता है और इस मौत के खेल को विकास का एक महत्वपूर्ण अंग माना जा रहा है। सबको डिजीटलाइज कर दिया है वा किया जा रहा है। किसी को इसके प्रदूषण से होने वाले घातक मानसिक और शारीरिक रोगों का न तो भय है और न भान ही है।** यदि कोई ईमानदार वैज्ञानिक इसके प्रति सचेत करता भी है, तो उसकी कहीं चर्चा नहीं की जाती है और यदि कुछ की भी जाए, तो डिजीटलाइजेशन के नशे में डूबा व्यक्ति

न तो अपने नशे को छोड़ सकता है और न सरकारें ही इसे छोड़ने दे सकती हैं, क्योंकि अब सब कुछ ऑनलाइन है। **यह स्पेस प्रदूषण केवल शारीरिक और मानसिक रोगों तक ही सीमित नहीं रहेगा, अपितु यह वायु, जल एवं मिट्टी के प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग का भी परोक्ष कारण बनकर प्राकृतिक आपदाओं को भी निश्चित रूप से पैदा करेगा, अथवा उनमें वृद्धि करेगा।**

आकाशीय बिजली गिरने की घटनाओं में तो स्पेस प्रदूषण (सूचना प्रौद्योगिकी) की प्रत्यक्ष व अनिवार्य भूमिका होगी। इससे गरीबों व ग्रामीणों को इस त्रासदी का सामना अधिक करना होगा, क्योंकि सभी लोग तड़ित चालक लगाने में सक्षम नहीं होंगे। इससे खेतों पर काम करने वाला कृषक, पशुपालक तथा श्रमिक सबसे अधिक संकट में होगा। **आज सम्पूर्ण सूचना प्रौद्योगिकी, आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस, रोबोट्स आदि स्पेस को क्षत-विक्षत करने के ही साधन हैं।**

अब मैं स्पेस प्रदूषण से भी सूक्ष्म परन्तु सबसे घातक व मूल प्रदूषण की चर्चा करना चाहूँगा, वह है मनस्तत्त्व का प्रदूषण। **आज मानव मस्तिष्क अथवा अन्य प्राणियों के मस्तिष्क से उत्सर्जित काम (यौनेच्छा), क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, असत्य, दुःख, शोक, हिंसा, लोभ आदि की तरंगों से इस ब्रह्माण्ड का सम्पूर्ण मनस्तत्त्व, जो स्पेस तथा वर्तमान भौतिकी द्वारा ज्ञात स्ट्रींगस् (String) से भी अति सूक्ष्म व उसका उपादान कारण है, भयंकर रूप से प्रदूषित है। करोड़ों प्राणियों की हत्या व मनुष्य द्वारा मनुष्य को भी दुःख देने से उत्पन्न पेन वेव्स, अरबों मनुष्यों द्वारा प्रतिदिन बार-२ बोले जाने वाले झूंठ, यौन उच्छृंखलता, पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष व लोभ आदि से उत्पन्न नकारात्मक तरंगें न केवल इस पृथिवी को, अपितु सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को भी प्रभावित कर रही हैं।** इसके चलते न केवल पृथिवी पर गर्मी का बढ़ना, भूकम्प, सुनामी, तूफान, चक्रवात, सूखा, बाढ़, वनों में आग लगना, कहीं-2 भारी हिमपात आदि प्रकोप हो रहे हैं, अपितु भविष्य में सूर्य में होने वाली गतिविधियाँ भी प्रभावित होकर हमारे लिए संकट का कारण बनने वाली हैं।

पिछले वर्ष से कोरोना के नाम पर झूँठ, भय, ठगी व हिंसा के रूप में संसार के यशस्वी लोगों, सरकारों व मीडिया की भंयकर अराजकता संसार ने देखी, उसी पाप के परिणाम को हमने इस बार विश्व भर में, मौसम के क्रूर ताण्डव के रूप में देखा। पृथिवी के उत्तरी गोलार्ध में अप्रत्याशित तापमान वृद्धि, अप्रत्याशित व असमय चक्रवात, यूरोप व चीन की बाढ़, कहीं वनों की भयंकर आग, अनियन्त्रित वर्षा, ये सब इसी झूँठ व हिंसा के ताण्डव का परिणाम है। दुर्भाग्य यह है कि यह सारा झूँठ अधिकारिक स्तर पर विश्व भर में लगातार बोला गया है। यदि कोई हमारे इस मत का उपहास करे, तो मैं केवल यहीं कहना चाहूँगा कि वह भौतिक विज्ञान को और साथ ही पर्यावरण विज्ञान को गम्भीरता से न तो समझता है और न समझ सकता है। यदि आज विश्व अधिकाधिक मात्रा में वृक्षारोपण करे तथा वैदिक यज्ञ-विज्ञान पर शोध करे और इसे अपनाये, मनुष्य अपने विचारों को पवित्र करके योग-ध्यान का अभ्यास करे, सम्पूर्ण विश्व में मांस-मछली, अण्डा आदि के खाने पर प्रतिबंध लगे और प्रेम, दया, करुणा, मैत्री, सत्य व सदाचार की सकारात्मक तरंगों से मनस्तत्त्व को भर दिया जाए, तो पर्यावरण के विनाश को अब भी रोका जा सकता है। यज्ञ विशुद्ध रासायनिक प्रक्रिया है, इसे साम्प्रदायिक दृष्टि से देखना अज्ञानता होगा। यदि कोई इसे साम्प्रदायिक माने, तो मैं जानना चाहूँगा कि इसकी कौन सी गैसें तथा घृत, वनस्पति व अग्नि में से साम्प्रदायिक कौन से पदार्थ हैं?

महोदय! मैं एक और बिन्दु पर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा। संसार में करोड़ों वर्षों से मनुष्य इस पृथिवी पर घर बना कर रहता आया है परन्तु कितने घरों के अवशेष आज मिलते हैं? सब कहाँ गये? कैसे वे मिट्टी में मिल गये? अब विचारें कि वर्तमान सीमेंट युग के मकानों के मलबे को क्या, यह पृथिवी सहन कर पायेगी? क्या यह मलबा रीसाइकिल हो पायेगा? तब क्या भूमि विषैली व बंजर नहीं होगी? क्या इसका विकल्प किसी के विचार में है?

महोदय! बिन्दु और भी हो सकते हैं परन्तु विस्तार भय से मैं अब और अधिक नहीं लिखना चाहता, परन्तु बड़ी विनम्रता के साथ इतना निवेदन अवश्य करना चाहूँगा कि वेद में न केवल सम्पूर्ण विज्ञान का मूल है, अपितु जीवन जीने के लिए

आवश्यक सम्पूर्ण विद्याओं का भी मूल है। **दुर्भाग्य से वेद को भारत और हिन्दुओं के ग्रन्थ के रूप में ही समझा जा रहा है। इसके लिए सभी दोषी हैं।** मेरी दृष्टि में मूलत: हिन्दुओं के मध्यकालीन कुछ आचार्य ही दोषी हैं, जिन्होंने वेदों एवं ऋषियों के ग्रन्थों के यथार्थ विज्ञान को नहीं समझा और इनका विकृत व बीभत्स रूप संसार के समक्ष प्रस्तुत किया। इसके साथ ही **हिन्दुओं ने इसे अपना कह कर प्रचारित किया, तो अन्य सम्प्रदाय वालों ने ज्ञान-विज्ञान के इस महान् खजाने को न केवल अपना मानने से ही इनकार कर दिया, अपितु उसे विरोध और घृणा का पात्र भी बना दिया। जो समाज किसी मूल्यवान् वस्तु को अपना होते भी अपना न माने और उसका विरोध व घृणा करने लगे, तब वह समाज किसी अन्य के साथ नहीं, बल्कि स्वयं के साथ ही अन्याय कर रहा होता है।**

वस्तुत: वेद एक ब्रह्माण्डीय ग्रन्थ है, इसमें विद्यमान मन्त्रों की ध्वनियों से ही ब्रह्माण्ड की रचना हुई है। संसार की प्रत्येक वस्तु में वेद मन्त्रों की ध्वनियों की ही सूक्ष्म परन्तु व्यापक रूप से विद्यमानता है। इसको प्रमाणित करने के लिए और सम्पूर्ण सृष्टि विज्ञान को आधुनिक विज्ञान की अपेक्षा बहुत गहराई व व्यापकता से समझाने के लिए मैंने संसार को 'वैदिक रश्मि थ्यौरी' दी है, जिस पर मैं और मेरी टीम के सदस्य संसार के किसी भी स्तर के वैज्ञानिक व वैज्ञानिकों के समूह से प्रीतिपूर्वक मैत्रीभाव के साथ सम्वाद करने के लिए तैयार हैं। इससे सम्पूर्ण मानव जाति को एकता के सूत्र में बाँधा जा सकता है। वेद इस पृथिवी की सभी समस्याओं का समाधान करने में सक्षम है और वैदिक ऋषियों के ग्रन्थ इसमें पूर्ण सहायक होंगे। यदि संयुक्त राष्ट्र संघ चाहे, तो वेद के माध्यम से सभी देशों के सभी मनुष्यों, यहाँ तक कि पशुओं का भी कल्याण किया जा सकता है, परन्तु इसके लिए सबको अपने पूर्वाग्रह, हठ एवं अहंकार व स्वार्थ आदि दोषों को छोड़ना होगा।

महोदय! अब संसार के पास वेदमार्ग के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग है भी नहीं। वह इस मार्ग पर जितना शीघ्र चलना प्रारम्भ कर दे, उतना ही उसके हित में होगा, अन्यथा सर्वनाश करके तो उसे इधर आना ही होगा। तब तक जो भी कसरत करनी

हो, कर ले।

मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि इस पत्र पर निष्पक्ष विशेषज्ञों के साथ गम्भीरता से विचार करके एक ऐसे विश्व का निर्माण करें, जहाँ

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्'

अर्थात् सभी सुखी होवें, सभी निरोग होवें, सभी का सब प्रकार से कल्याण होवे और इस पृथ्वी पर कोई भी दुःखी न होवे। **इस सबसे बढ़कर वेद में तो यह प्रार्थना की गई है कि सम्पूर्ण द्युलोक अर्थात् तारों व गेलैक्सियों के केन्द्रों का निकटतम भाग, सभी तारे, ग्रह व उपग्रह, आकाश, भूमि, जल, वायु, सम्पूर्ण ऊर्जा, ज्ञान-विज्ञान, मानव व प्राणि जगत् के लिए शान्ति व आनन्द से भरा अर्थात् अनुकूल व संतुलित होवे। सम्पूर्ण जीव जगत्, वनस्पति जगत् आदि भी शान्तिदायक होवे। परब्रह्म परमात्मा व उसका ज्ञान-विज्ञान भी हमारे लिए शान्ति दायक हो। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में रहने वाले सभी प्राणी तीनों प्रकार के दुःख अर्थात् शारीरिक, मानसिक व आत्मिक रोगों के अतिरिक्त सभी प्रकार के प्राकृतिक प्रकोपों एवं परस्पर एक दूसरे से होने वाले दुःखों से सर्वथा मुक्त रहें। क्या संसार का कोई भी ग्रन्थ अथवा संस्था ऐसे उच्चतम आदर्श की कल्पना भी कर सकती है? दुर्भाग्य से हम मानवों ने वेद को भूल कर अपनी-२ कुबुद्धि से चलना प्रारम्भ कर दिया, तब उसे सुख कैसे मिलेगा,** इस कारण आवश्यकता इस बात की है कि हम सभी मानव साथ-२ मिलकर इस वेद मार्ग पर चलें।

महोदय! यदि आप मेरी अथवा हम उन भारतीयों, जो वेदादि शास्त्रों और प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान पर गर्व करते हैं, की बात नहीं मानें, तो कम से कम इन निम्नलिखित विद्वानों एवं वैज्ञानिकों की ही बात पर विचार करने की कृपा करें-

प्रो. हीरेन् (Prof. Heeren) नामक एक सुप्रसिद्ध विद्वान् ने वेदों के विषय

में लिखा कि–

'They (The Vedas) are without doubt the oldest works composed in Sanskrit. Even the most ancient Sanskrit writings allude to the Vedas as already existing. The vedas stand alone in their solitary splendour standing as beacon of Divine Light for the Onward march of Humanity.'[16]

अर्थात् इसमें सन्देह नहीं कि वेद संस्कृत के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। उपलभ्यमान सबसे अधिक प्राचीन संस्कृत–ग्रन्थों में भी उनकी विद्यमानता का स्पष्ट निर्देश पाया जाता है। वे मनुष्यमात्र की उन्नति के लिए अपनी अद्भुत शान में दिव्य प्रकाश–स्तम्भ का काम देते हैं।

नोबेल पुरस्कार विजेता सुप्रसिद्ध दार्शनिक **मैटरलिंक** ने स्टाइनर् नामक विद्वान् के शब्दों में वेदों के महत्त्व को

निम्नलिखित शब्दों में प्रकट किया–

Only the gaze of the clairvoyant, directed upon the mysteries of the past, may reveal un-uttered wisdom which lies hidden behind these writings (The Vedas).[17]

Whence did our pre-historic ancestors in their supposed terrible state of ignorance and abandonment, derive these extra-ordinary intuitions that knowledge and assurance which we ourselves are re-conquering.[18]

भावार्थ– केवल सूक्ष्मदर्शी की अन्तर्दृष्टि ही है, जो वेदों में भरे सूक्ष्म ज्ञान को प्रकट कर सकती है। आश्चर्य यह है कि हमारे प्रागैतिहासिक काल के पूर्वजों ने जिनके विषय में यह कल्पना की जाती है कि वे घोर अज्ञान की भयंकर अवस्था में थे, कहाँ से वह असाधारण अन्तर्ज्ञान प्राप्त कर लिया, जिसे हम फिर से प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं?

थोरियो नामक अमेरिका के सुप्रसिद्ध विद्वान् ने वेदों के विषय में निम्न उद्गार प्रकट किये-

What extracts from the Vedas I have read fall on me like the light of a higher and purer luminary which describes a loftier course through a purer stratum free from particulars, simple, universal; the Vedas contain a sensible account of God. [19]

भावार्थ- मैंने वेदों के जो उद्धरण पढ़े हैं वे मुझ पर एक उच्च और पवित्र ज्योतिपुंज के प्रकाश की तरह पड़ते हैं, जो एक उत्कृष्ट मार्ग का वर्णन करता है।

Sacred Books of the East Series के Russian Edition के सम्पादक **मि. बौलंगर** (Mr. Boulanger) ने प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् प्रो. मैक्समूलर के वेदों के अटकलपच्चू अनुवाद स्वयं प्रो. मैक्समूलर ने The Vedic Hyms में स्वीकार किया है कि- 'My translation of the Vedas is conjectural' अर्थात् 'वेदों का मेरा अनुवाद अटकलपच्चू वा अनुमान पर आश्रित है' की कड़ी समालोचना करते हुए भूमिका में लिखा-

What struck me in Maxmuller's translation was a lot of absurdities, obscene passages and a lot of what is not lucid. As far as I can grasp the teaching of the Vedas, it is so sublime that I would look upon it as a crime on my part if the Russian public becomes acquainted with it through the medium of a confused and distorted translation, thus not deriving for its soul that benefit which this teaching should give to the people.[20]

अर्थात् प्रो. मैक्समूलर के अनुवाद में जिस बात से मुझे अत्यन्त आश्चर्य हुआ है वह यह है कि उसमें बहुत सी बेहूदी, अश्लील और अस्पष्ट बातें हैं। जहाँ तक मैं वेदों की शिक्षा को समझ सकता हूँ, मुझे वह इतनी अधिक उच्च मालूम होती है कि रूसी जनता को एक गड़बड़ और भद्दे अनुवाद द्वारा उससे परिचय कराने को मैं बड़ा भारी अपराध मानता हूँ, क्योंकि इससे वह उस आत्मिक लाभ से वंचित रह

जायेगी, जो वैदिक शिक्षा जनता को देती है।

मि. डब्लू. डी. ब्राउन (W.D.Brown) नामक एक अङ्गरेज विद्वान् ने अपने Superiority of the Vedic Religion (वैदिक धर्म की श्रेष्ठता) नामक ग्रंथ में वैदिक धर्म के विषय में जो लिखा है वह स्वर्णाक्षरों में उल्लेख करने योग्य है । वे लिखते हैं-

It (Vedic Religion) recognises but One God. It is a thoroughly scientific religion where religion and science meet hand in hand. Here theology is based upon science and philosophy.[21]

अर्थात् वैदिक धर्म केवल एक ईश्वर का प्रतिपादन करता है। यह एक पूर्णतया वैज्ञानिक धर्म है, जहाँ धर्म और विज्ञान हाथ में हाथ मिलाकर चलते हैं। धार्मिक सिद्धान्त यहाँ विज्ञान और तत्त्वज्ञान वा फिलॉसफी पर आश्रित हैं।

फ्रैंच विद्वान्, जैकोलियट्, महोदय ने बड़े आश्चर्य के साथ लिखा–

Astonishing fact! The Hindu Revelation (Veda) is of all revelations the only one whose ideas are in perfect harmony with Modern Science, as it proclaims the slow and gradual formation of the world.[22]

अर्थात् कितनी आश्चर्यजनक सचाई है! हिन्दुओं का ईश्वरीय ज्ञान (वेद) ही, जो लोको की मन्द और क्रमिक रचना बताता है, सब ईश्वरीय ज्ञानों में एक ऐसा है, जिसकी कल्पनाएं आधुनिक विज्ञान के साथ पूर्ण रूप से मिलती हैं।

नोबेल पुरस्कार विजेता एवं प्रसिद्ध भौतिकविद्, **ब्रायन डेविड जोसेफसन**

'मन और विचार पद्धति, जिनका सीधा सम्बन्ध क्वान्टम क्षेत्र, अर्थात अणु और परमाणुओं के स्तर पर कणों का वितरण और संक्रिया से है, उनके नियमों की कुंजी वेदान्त और सांख्य के पास है।'[23]

ब्रिटेन के महान् गणितज्ञ तथा दार्शनिक, **अल्फ्रेड नार्थ व्हाइटहेड**

'मानव बुद्धि द्वारा सोचे विचारे गए दर्शनों में वेदान्त सर्वोत्कृष्ट है।'[24]

विश्व प्रसिद्ध साइकेट्रिस्ट, प्रभावशाली चिन्तक और विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के संस्थापक, **कार्ल यूंग**

'जैसे हम उपनिषदों का अध्ययन करते हैं, हमारे मन पर एक प्रभाव बढ़ता जाता है कि यह मार्ग वास्तव में सरलतम मार्ग नहीं है। इस भारतीय सूक्ष्म ज्ञान के सामने हमारा नकचढ़ापन वास्तव में हमारे बर्बर होने का प्रमाण है, जो उस ज्ञान की असाधारण गहनता और चकित करने वाली मनोवैज्ञानिक परिशुद्धता को तनिक भी नहीं समझ सकता।' [25]

प्रतिष्ठित अंग्रेज दार्शनिक और बीसवीं सदी के लोकप्रिय लेखक, **एलन वाट्स**

'भारतीय दार्शनिकों के लिये सापेक्षता का सिद्धान्त कोई नई खोज नहीं है, जैसे कि प्रकाश वर्ष की अवधारणा भी उनके लिये कोई आश्चर्य की बात नहीं है, जो करोड़ो कल्पों पर विचार करते रहते हैं।'[26]

'यह बात ध्यान देने योग्य है कि पाश्चात्य सभ्यता ने जब सापेक्षता के सिद्धान्त की खोज की तब उसने उसका उपयोग परमाणु बम बनाने में किया, जबकि पौर्वात्य सभ्यता ने इस ज्ञान का उपयोग चेतना की नवीन अवस्थाओं के विकास के लिये किया।'[27]

नोबेल पुरस्कार विजेता डेनिश परमाणु वैज्ञानिक, **नील्स बोर**

'जब मैं प्रश्नाकुल होता हूँ, तब मैं उपनिषदों का अध्ययन करता हूँ।'[28]

बीसवीं सदी के सर्वाधिक सम्मानित अमेरिकी कवि, दार्शनिक तथा आलोचक, नोबेल पुरस्कार से सम्मानित, **टी.एस.इलियट**

'भारतीय दार्शनिकों के सूक्ष्म चिन्तन के सामने अधिकांश महान यूरोपीय दार्शनिक स्कूल के बालक जैसे दिखते हैं।'[29]

एक जर्मन-स्विस नोबेल पुरस्कार से सम्मानित, **अल्बर्ट आइन्स्टाइन**

'हम भारत के अत्यंतऋणी हैं जिन्होंने हमें गिनना सिखाया, जिसके बिना कोई भी सार्थक वैज्ञानिक खोज नहीं की जा सकती थी।'[30]

बीसवीं शताब्दी के एक महानतम भौतिकविद, नोबेल पुरस्कार से सम्मानित, **एर्विन श्रोडिंगर**

'पूर्व से पश्चिम में कुछ रक्तदान आवश्यक है ताकि पाश्चात्य विज्ञान को आध्यात्मिक रक्ताल्पता से बचाया जा सके।'[31]

'सम्पूर्ण संसार में उपनिषदों के अतिरिक्त कोई जीवन दृष्टि का स्रोत नहीं है, जिसमें हमें विविधता में एकता का दर्शन हो सके।'[32]

जर्मनी के महानतम वैज्ञानिकों में से एक तथा क्वाण्टम यांत्रिकी के सहप्रणेता, 1932 में नोबेल पुरस्कार, **वेर्नर हाइजेनबर्ग**

'भारतीय दर्शन के बारे में चर्चा करने के बाद क्वाण्टम भौतिकी के जो विचार नितान्त विचित्र और अविश्वसनीय लग रहे थे, यकायक अर्थपूर्ण लगने लगे।'[33]

पश्चिम के ज्ञानोदय युग के सर्वोत्कृष्ट लेखक, आलोचक, निबन्धकार, इतिहासकार एवं दार्शनिक, **फ्रान्स्वा एम. वोल्तेयर**

'मैं सुनिश्चित हूँ कि खगोलशास्त्र, ज्योतिष, देहांतरण, आदि सारा ज्ञान गंगा के तट से आया है। यह बहुत महत्वपूर्ण तथ्य है कि कोई 2500 वर्ष पूर्व, पाइथागोरस निश्चित ही रेखागणित सीखने सामोस से गंगा गया था। किन्तु उसने यह कठिन और अनजान यात्रा कभी न की होती, यदि यूरोप में ब्राह्मणों के विज्ञान की प्रतिभा की

धाक वर्षों से न जमी होती।[34]

'वेद सबसे मूल्यवान उपहार है, जिसके लिए पश्चिम पूर्व के प्रति सदा ऋणी रहेगा।'[35]

श्रेष्ठतम जर्मन दार्शनिक तथा लेखक, **आर्थर शोपेनहवर**

'उपनिषदों के अध्ययन के समान लाभकारी तथा उन्नयन करने वाला पवित्र साहित्य विश्व में दूसरा नहीं है। इस साहित्य के अध्ययन से मुझे जीवन में शान्ति मिली है और मृत्यु पर भी शान्ति प्राप्त होगी। इनका गहनतम लेखन यवं चिन्तन का परिणाम है।'[३६]

'वैदिक ज्ञान तक पहुँच – वर्तमान सदी के लिये विशेष सौभाग्य की बात है।'[37]

प्रसिद्ध अमेरिकी भौतिकविद, परमाणु बम की सैद्धान्तिक संकल्पना करने वालों में प्रथम, **जान आर्चिबाल्ड व्हीलर**

'मुझे ऐसा लगता है कि पूर्व के चिन्तक सर्वज्ञाता थे और यदि हम उनके द्वारा दिये गये उत्तरों का अनुवाद मात्र ही अपनी भाषा में ढाल सकें, तब हमें अपने सारे प्रश्नों के उत्तर मिल जाएंगे।'[38]

'यह उत्सुकता का विषय है कि श्रोडिंगर, नील्स बोर, ओपेनहाइमर जैसे व्यक्ति उपनिषदों के ज्ञाता थे।'[39]

विश्व के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिकों में से एक जिन्हें एटम बम का जनक कहा जाता है, **जुलियस आर. ओपेनहाइमर**

'हम आधुनिक भौतिक विज्ञान में जो कुछ भी पायेंगे, वो प्राचीन हिंदु ज्ञान का उदाहरण, प्रोत्साहन एवं संशोधन है।'[40]

अमेरिका के श्रेष्ठतम दार्शनिक, लेखक, सामाजिक आलोचक, भावातीतवादी,

हैनरी डेविड थोरो

'वेदों का एक वाक्य ही मैसाचुसेट्स प्रान्त से अनेक गुना मूल्यवान है।'[41]

'जब भी मैंने वेदों का कोई भी अंश पढ़ा है, मैंने पाया कि किसी विचित्र और अनजाने दैवीय प्रकाश ने मेरे अन्तरतम को उजाले से भर दिया है। महान वैदिक उपदेशों में सम्प्रदायवाद लेश मात्र भी नहीं है। वेद सर्वकालिक, सार्वभौमिक व सर्वजनीन है और वे महान ज्ञान की प्राप्ति का उत्तम मार्ग हैं। जब मैं इन्हे पढ़ रहा होता हूँ, तब मुझे लगता है कि मैं गर्मियों की रात के चमकदार आकाश के नीचे खड़ा हूँ।'[42]

प्रख्यात जापानी शोधकर्ता, जिन्होंने संस्कृत और पाली भाषाओं का अध्ययन किया, **हाजिमे नाकामुरा**

'भारत और जापान के बीच सांस्कृतिक संबंध बहुत पुराना है। जापानी संस्कृति आज जितनी समृद्, समुन्नत व परिष्कृत है, उसका श्रेय भारतवर्ष को ही जाता है।'[43]

अमेरिकी सैद्धान्तिक भौतिकीविद, **जेक सर्फात्ती**

'मेरी समझ में सामान्य सापेक्षता तथा क्वाण्टम सिद्धान्त दोनों ही एक मूल सिद्धान्त के अनुपूरक पक्ष हैं, जो कि ब्रह्माण्डीय चेतना से सम्बन्धित होंगे। भारतीय सांख्य दर्शन का महत् ब्रह्माण्डीय चेतन या सम्पूर्ण सृष्टि का आधार है।'[44]

ये विद्वान् एवं वैज्ञानिक तो वेद के ज्ञानविज्ञान को बहुत कम समझ पाए हैं। यदि ये वर्तमान में जीवित होते और हमारी वैदिक रश्मि थ्योरी पढ़ लेते, तो अत्यंत प्रफुल्लित हो उठते। मैं तो आपके माध्यम से विश्व के वैज्ञानिकों एवं अन्य विद्वानों का आहवान् करता हूँ कि वे एक बार अपने-२ देश, भाषा व सम्प्रदायों की सीमाओं से बाहर निकल कर मात्र एक ईमानदार व सत्यान्वेषी मनुष्य बन कर अपने विज्ञान व तकनीक के साथ-२ वैदिक विज्ञान पर भी विचार करने का कष्ट करें। मुझे आशा है कि उन्हें एक अद्भुत प्रकाश मिलेगा।

आशा है अब तो आप वेद की महत्ता को समझ गए होंगे और ऐजेंडा 2030 पर पुनर्विचार करके इस विश्व को बचाने में अपनी अहम भूमिका निभायेंगे।

इसी भावना के साथ

आपका सादर

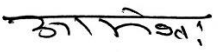

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

प्रमुख, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था, न्यास

Sign this petition

Click here...

ओ३म्

माननीय प्रधानमन्त्री महोदय की सेवा में सार्वजनिक निवेदन

सेवा में,

माननीय श्रीमान् नरेन्द्र जी मोदी
प्रधानमन्त्री, भारत सरकार
नई दिल्ली।

विषय : संयुक्त राष्ट्र संघ को मेरे द्वारा लिखित पत्र को आपश्री की सेवा में विचारार्थ।

मान्यवर महोदय!

उपर्युक्त विषयान्तर्गत विनम्र निवेदन है कि संयुक्त राष्ट्र संघ के एजेंडा 2030 को मैंने पढ़ा और मुझे प्रतीत हुआ कि यह एजेंडा आकर्षक होते हुए भी मनुष्यमात्र के लिए बहुत घातक है। इससे सभी देशों की स्वतंत्रता, सम्प्रभुता एवं आत्मसम्मान सदा के लिए समाप्त हो जायेगा। इस एजेंडे में जो परिणाम दिखाए हैं, उन्हें बहुत तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया है।

इस कारण मैंने माननीय श्रीमान् महासचिव महोदय, संयुक्त राष्ट्र संघ की सेवा में एक विस्तृत पत्र भेजा है। इस पत्र में मैंने उनका ध्यान इन बिन्दुओं की ओर आकृष्ट करते हुए वेद व ऋषियों के सनातन ज्ञान-विज्ञान तथा प्राचीन भारतीय परम्पराओं के द्वारा समाधान भी संकेत रूप में प्रस्तुत किया है।

मान्यवर! आप हमारे प्रधानमन्त्री ही नहीं, अपितु विश्व के एक अति लोकप्रिय नेता हैं। इस कारण आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप कृपया इस पत्र को गम्भीरता से पढ़कर विश्व को इस एजेंडा से उत्पन्न भावी गम्भीर समस्याओं से बचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का कष्ट करें। यदि आप ऐसा कर सके, तो भारत ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व आपका आभारी रहेगा। मुझे आपसे यही आशा है।

मान्यवर! यदि इस एजेंडे को नहीं रोका गया, तो भारत ही नहीं, अपितु विश्व से मानवता सदा के लिए मिट जायेगी और हम सब किसी के पशुवत् दास बन रह जायेंगे।

आशा व विश्वास के साथ

आपका

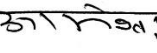

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
प्रमुख, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास,
आचार्य, वैदिक एवं आधुनिक भौतिकी शोध संस्थान
भागलभीम, भीनमाल, जालोर (राज.) - 343029

संलग्न : संयुक्त राष्ट्र संघ को मेरे द्वारा लिखित पत्र

दिनांक : 12.11.2021

प्रतिलिपि :

1. **महामहिम श्रीमान् रामनाथ जी कोविंद,** राष्ट्रपति, भारत गणराज्य, राष्ट्रपति-भवन, नई दिल्ली
2. महामहिम श्रीमान् वेंकैया नायडू जी, उपराष्ट्रपति, भारत गणराज्य
3. सभी माननीय केन्द्रीय मन्त्री, भारत सरकार
4. सभी महामहिम राज्यपाल महोदय
5. सभी माननीय मुख्यमन्त्री महोदय
6. सभी माननीय सांसद गण
7. एवं अन्य प्रबुद्धजन व मीडिया आदि

संदर्भ ग्रन्थ

[1] Transforming our world : The 2030 Agenda for sustainable development
[1] GM Soy Linked to steritily?
[2] Health Report : www.rense.com
[3] Depopulation in the concept of sustainable
[4] Rocznik Ochrona Swodwiska, Volume -2) year 2021 (Page – 523-542)
[5] Rocznik Ochrona Swodwiska, Volume -2) year 2021 (Page – 523-542)
[6] Covid 19 and Public health totalitararianism
[7] In theory : Is theoritical physics in crisis ? Posted by Harriet kim Jarlett – 18 may 2016
[8] 'Syukuro Manabe (Princeton university, USA), Klaus Hasselmann (Max Plank institute for meteorology Hamburg, Germany), Giorgio Parisi (Sapienza university of Rome, Italy)
[9] https://www.nrdc.org, Greenhouse effect 101
[10] https://www.epa.gov, Overview at Greenhouse Gases, USA EPA
[11] https://www.nrdc.org, Greenhouse effect 101
[12] https://www.theguardian.com, 'what's the carbon footprint of ... Using a mobile phone ?' (writer – Mike Bernese Lee)
[13] https://www.reboxed.co, 'The Carbon footprint of your phone and how can reduce it ?' CO_2 (writer - Matt Thorne)
[14] https://www.epa.gov, Overview at Greenhouse Gases, USA EPA
[15] https://www.eia.gov, 'Frequentaly Asked qustions (FAQS)' - US Energy information administration (EIA)
[16] Historical Researches by Prof. Heeren, Vol. II, P. 127
[17] The Great Secret by Maeterlinck, P.9
[18] The Great Secret by Maeterlinck, P.44
[19] Quoted from Mother America, by Swami Omkar, O.9
[20] Quoted here from Sadhu TL. Vaswani's Torch bearer, P. 143
[21] The Superiority of the Vedic Religion by W.D.Brown
[22] The Bible in India by Jacolliot, Vol. II, Chapter 1
[23] God Talks With Arjuna by Paramahansa Yogananda
[24] Tryptamine Palace: 5-MeO-DMT and the Sonoran Desert Toad by James Oroc
[25] Psychological Types by Carl Jung
[26] Spiritual Practices of India by Frederic Spiegelberg
[27] The Legacy of Asia and Western Man by Alan Watts
[28] Indian Conquests of the Mind by Saibal Gupta
[29] After Strange Gods by T.S. Eliot
[30] Ignited Minds: Unleashing the Power within India by APJ Abdul Kalam

[31] Long Walk to Enlightenment by Dr. Thillayvel Naidoo
[32] My View of the World by Erwin Schrödinger
[33] Uncommon wisdom - by Fritjof Capra
[34] Riding the Indian Tiger by William Nobrega, Ashish Sinha
[35] Eclectic magazine: Foreign literature by John Holmes Agnew, Walter Hilliard Bidwell
[36] The Discovery of India by Jawaharlal Nehru
[37] Autobiography of a Yogi by Paramhansa Yogananda
[38] Uncommon Wisdom by Fritjof Capra
[39] Indian Conquests of the Mind by Saibal Gupta
[40] The Tao of Physics by Fritjof Capra
[41] The Journal of Henry David Thoreau
[42] Ancient Roots, Many Branches by Darlena L'Orange, Gary Dolowicht
[43] Japan and Indian Asia, by Hajime Nakamura
[44] Mysticism and the new physics by Michael Talbot

नोटः

संदर्भ 17–23, वेदों का यथार्थ स्वरूप, लेखक – धर्मदेव विद्यामार्तण्ड

संदर्भ 24–45, **भारत क्या है ?** (विश्वविख्यात विद्वानों की दृष्टि में), संकलन कर्त्ता – सलील ज्ञवाली